दिनांक :- 02-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- 12th

विषय प्रतिष्ठा इतिहास (अनुशांगिक)
इकाई तृतीय
पत्र एक

अध्याय :- कांस्यकाल :- हड़प्पा एवं सिंधु घाटी की सभ्यता।

रोपड़ :- पंजाब प्रान्त मे सतलज नदी के बाये तट पर स्थित यह भारत का ऐसा सैंधव स्थल है जहाँ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सर्वप्रथम उत्खनन किया गया था। इसका आधुनिक नाम रुपनगर है। 1950 में इसकी खोज बी॰बी॰लाल ने की तथा 1953-55 के दौरान यज्ञ दत्त शर्मा मे ने इसकी खुदाई करवाई। यहाँ संस्कृति के छः चरण मिलते है। इनमें प्रथम ही सैंधव कालीन है। यहाँ से इस सभ्यता के लगभग सभी पुरावशेष - मृदभाण्ड, सेलखड़ी की मुहर, तीन विभिन्न

प्रकार की मुहरों से अंकित ठप्पे, चर्ट के बटखरे एक छुरा तांबे का बाणाग्र तथा कुल्हाड़ी आदि प्राप्त होते है। एक ऐसा कब्रिस्तान मिला है जिसमें मनुष्य के साथ पालतु कुत्ता भी दफनाया गया है

भगवान पुरा

हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले में सरस्वती नदी के दक्षिण किनारे पर स्थित इस स्थल से सैंधव सभ्यता के पतनोन्मुख काल के अवशेष मिलते है। इसका उत्खनन जे० पी० जोशी द्वारा करवाया गया था। यहां के प्रमुख अवशेष सफेद काले तथा आसमानी रंग की कांच की चूड़ियां तांबे की चूड़ियां, कांच की मिट्टी की चित्रित मनके आदि है। यहां से ऋग्वैदिककालीन चित्रित धूसर मृदभाण्ड (Painted Grey ware) भी प्राप्त हुए है। हरियाणा के अन्य उत्खनित स्थल राखी गढ़ी, मीत्ता थल, तथा कुणाल है।

राखी गढ़ी सैंधव सभ्यता का सबसे बड़ा और विस्तृत स्थल है। राखीगढ़ी की खोज (जींद के पास) सूरजभान ने की। यह नगर सरस्वती नदी के तट पर हुआ था। तथा इसका क्षेत्रफल 240 हेक्टेयर के लगभग था। स्पष्टतः मोहनजोदड़ो की तुलना में यह तीन गुना अधिक विस्तृत है। यहाँ से ताँबे के उपकरण तथा सैंधव लिपि में अंकित एक मुहर मिली है। मीताथल (भिवानी जिला) की खुदाई भी 1968 में सूरजभान द्वारा करवाई गयी थी। विकसित हड़प्पा काल में यहाँ दुर्ग तथा आवासीय बस्ती के साक्ष्य मिलते हैं। अन्य अवशेष ताँबे की कुल्हाड़ी, पानपात, पत्थर के बटखने मृद्भाण्ड, मिट्टी एवं सीप की चूड़ियाँ आदि हैं। कुणाल (हिसार जिला) प्राक् सैंधव कालीन स्थल है। यहाँ से चाँदी के दो मुकुट प्रकाश में आये हैं।

Scanned with CamScanner

कालीबंगन

राजस्थान के गंगा नगर जिले में घग्घर नदी के बायें किनारे पर स्थित यह सैंधव सभ्यता का एक महत्व पूर्ण स्थल है। यहाँ 1961 ई० में बी० बी० लाल तथा बी० के० थापड़ के निर्देशन में व्यापक पैमाने पर खुदाई की गयी थी। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के समान यहाँ से भी दो टीले मिलते हैं जो सुरक्षा दिवारो से घिरे हैं। पश्चिम की ओर स्थित टीला छोटा तथा पूर्व की ओर का बड़ा था। पश्चिमी टीले को 'कालीबंगन प्रथम' नाम दिया गया है। इसके नीचले स्तरो से प्राक् सैंधव सभ्यता के अवशेष मिलते हैं। इस टीले की बस्ती भी सुरक्षा भित्ति से घिरी हुई थी। इसके निर्माण में 30×30 सेमी० की कच्ची ईंटो का प्रयोग किया गया था। यह मूलतः 1.90 मीटर चौड़ी थी जिसे बाद में दुगुना कर दिया गया। प्राक् सैंधव-काल के प्रमुख अवशेष

मे लाल अथवा गुलाबी रंग के चाक निर्मित मृद्भाण्ड साधारण तश्तरियाँ, पेंदीदार और सँकरे मुंह के घड़े, छोटे-बड़े आकार के मटके आदि है। कुछ बर्तनों पर काले रंग में ज्यामितीय अभिप्राय चित्रित है। गोमेद, चाल्सिडनी तथा कार्नीलियन से बने पाषाण उपकरण, ताम्र निर्मित कुल्हाड़ी तथा मिट्टी की खिलौना गाड़ी के पहिये आदि इस स्तर से मिलते है। इसकाल की सबसे महत्व पूर्ण उपलब्धि एक जुते हुए खेत की प्राप्ति है। इसमें आड़ी-तिरछी जुताई की गयी है। एक और हराइयां (Furrows) पूर्व-पश्चिमी में तथा दूसरी ओर उत्तर-दक्षिण दिशा में बनाई गयी है। पहली की दूरी 30 सेमी तथा दूसरी की 190 सेमी है। दोनो एक दूसरे को समकोण पर कटती हुई जालीदार जुताई का नमूना प्रस्तुत करती है। कम दूरी की हराइयों में चना तथा ज्यादा दूरी की हराइयों में सरसो बोया जाता था। चूँकि जुताई की यह

विधि आज भी उत्तरी-पूर्वी-राजस्थान, हरियाणा, पंजाब तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रचलित है, अतः अनुमान किया जा सकता है कि विकसित हड़प्पा काल में भी यह विधि रही होगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग एक ही खेत में एक साथ दो फसलें उगाना जानते थे। यहाँ की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि बेलनाकार तंदूर है। इनके नीचे पुताई की गयी है जो बिल्कुल आज के तन्दुरों जैसी है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के पक्की ईंटों से बने हुए भवनों के विपरित कालीबंगन के भवन कच्ची ईंटों के बने हैं। जो सामान्यतः 30×15×7.15 सेमी० आकार की है। पक्की ईंटों का प्रयोग केवल नालियों, कुआँ एवं स्नानागार बनने में ही किया गया है। यहाँ से सार्वजनिक नाली के अवशेष भी नहीं मिलते हैं। मकानों की नालियों का पानी नाबदानों में गिरता था।

लकड़ी को कुरेद कर नाली बनाने का साक्ष्य केवल कालीबंगन में ही मिलता है।

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के अतिरिक्त यह भी सैंधव सभ्यता का एक प्रमुख स्थल है। लोथल काठीला अहमदाबाद (गुजरात) जिले में सरगवल नामक ग्राम के समीप स्थित है। 1955 तथा 1962 के मध्य यहाँ एस० आर० राव के निर्देशन में यहाँ खुदाई की गयी। जहाँ दो मील के घेरे में बसे हुए एक नगर के अवशेष प्राप्त हुए। नगर दो भागों में विभाजित था। दुर्ग (गढ़ी) तथा निचला नगर। समपूर्ण बस्ती एक ही प्राचीर में घिरी थी। प्राचीर के भीतर कच्ची ईंटों से बने चबूतरे पर घर बनाये गये थे। घरों के निर्माण के प्रायः कच्ची ईंटों का प्रयोग किया गया था। कुछ विशिष्ट भवन ही पक्की ईंटों के बने थे। नालियों तथा स्नानागृह की फर्शों के निर्माण में पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया था।

Scanned with CamScanner